

## कुछ अमूल्य संस्मरण

प्रो० श्रीमती अन्नपूर्णा शुक्ल  
पूर्व प्राचार्या, महिला महाविद्यालय  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सन् 1936-37 में मैं 6 वर्ष की थी। मेरे पिता जी स्व० पं० बाबूलाल त्रिपाठी, गणित विभाग, का०हि०वि०वि० में प्रवक्ता थे तथा महामना के अत्यन्त निकट थे क्योंकि विश्वविद्यालय के अनेकों कार्यों का सम्पादन बड़ी श्रद्धा एवं समर्पण की भावना से करते थे। मेरे पिता जी भोपाल, सीहोर, इछावर ग्राम के निवासी थे और मेरे बाबा पं० सुन्दरलाल त्रिपाठी के इकलौते पुत्र थे। मेरे पिता जी ने भोपाल से स्कूल की परीक्षा दी, उसके बाद इछावर में भीषण प्लेग फैल गया। मेरे बाबा ने अपना घर-द्वार सर्वदा के लिये त्याग कर पिता जी के साथ मालवीय जी की शरण में आने का निश्चय किया तथा मालवीय जी ने छिछुआ पोखरा रोहितेश्वर महादेव के मन्दिर, जो कि सम्भवतः सतयुग का बना हुआ है जहां बाद में न्यू मेडिकल एन्वलेव बना, वहां की देखभाल करने के लिये एवं रहने का आदेश दिया। मैं उस समय 5 वर्ष की थी तथा मुझे याद है कि वहाँ एक कुआँ था जहां से मेरी मां श्रीमती सुषमा त्रिपाठी जो कि लखनऊ, उत्तर प्रदेश ब्रिटिश राज्य में डिप्टी कलेक्टर की पुत्री थी, कुएँ में रस्सी से पानी भरती थी। वहां चारो तरफ जंगल एवं एक तालाब था। मन्दिर के प्रांगण में एक आंवले का पेड़ था जिसके नीचे अक्षय तृतीया को दाल बांटी मेरे पिता जी स्वयं बनाते थे क्योंकि वो स्वपाकी थी। इसके पहले पिता जी रुइया हॉस्टेल में रहते थे वहां कमरे में अंगीठी पर अपना भोजन स्वयं बनाते थे। बाबू जी को वेद मन्त्रोच्चारण कंठस्थ थे इसके अतिरिक्त संस्कृत एवं ज्योतिष के भी विद्वान थे। विश्वविद्यालय में जन्माष्टमी आर्ट्स कॉलेज हॉल में पिता जी आयोजित करवाते थे तथा ठीक 12 बजे रात्रि में घण्टा, शंख, बाजों के साथ कृष्ण भगवान का जन्म मन्त्रोच्चारण से सम्पन्न होता था। जिसमें महामना जी अवश्य उपस्थित होते थे। बाबू जी के सुसंकृत ज्ञान एवं व्यवहार के कारण महामना बहुत स्नेह तथा विश्वास के साथ बहुत से कार्यों की व्यवस्था एवं संपादन बाबू जी को दिया करते थे। महामना बाबू जी से कहते थे 'बाबूलाल विद्यार्थियों में इन्हीं संस्कारों का संवर्धन करो उन्हें भारतीय संस्कृति में आस्था हो ऐसा कार्यक्रम विश्वविद्यालय में होना चाहिए।' उन दिनों में विश्वविद्यालय में केवल कॉलेज थे—आर्ट्स कॉलेज, साइंस कॉलेज, इन्जीनियरिंग कॉलेज, वीमेन्स कॉलेज इत्यादि तथा पूरे वर्ष

भर खेलकूद स्पोर्ट्स, के अतिरिक्त तमाम एसोसिएसन्स थे जैसे बंगाल, आसाम, आन्ध्र एसोसिएशन जिनके बड़े उच्च कोटि के सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। उनमें से एक बुन्देलखण्ड एसोसिएशन था जिसकी प्रथम वर्षगांठ, 8 दिसम्बर सन् 1944 को महामना के जन्म दिवस पर उनके निवास पर मनाने के अवसर पर ग्रुप फोटो खींचा गया। (फोटो नं० 1)



(फोटो नं० 1)

सन् 1944 में मैं 14 वर्ष की थी तथा का०हि०वि०वि० में इण्टर साइन्स पास करके बी०एस०सी० के प्रथम वर्ष में पढ़ रही थी। मैं महामना के चरण के पास ग्रुप फोटो में बैठी हुई हूँ। इस समय महामना कुछ अस्वस्थ थे इस कारण कुछ झुककर बैठे दिख रहे हैं। इसी ग्रुप फोटो में प्रो० श्यामाचरण डे जिन्होंने

विश्वविद्यालय में अवैतनिक कार्य किया और जिनके नाम पर श्यामाचरण डे निवास मालवीय भवन संकुल में है, वो भी बैठे हैं तथा मेरा सौभाग्य था कि उनका भी स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ था।

इसके पहले जब मैं 6 वर्ष की थी उस समय मित्र मण्डल यूनियन की कार्यकारिणी समिति की एक सभा महामना के निवास पर हुई थी (ग्रुप फोटो नं०2) जिसमें प्रो० मुकुट बिहारी लाल, राजा ज्वाला प्रसाद, प्रो० वाइस चान्सलर तथा मेरे पिता जी अन्य लोगों के साथ बैठे हैं। इस फोटों को खिंच जाने के बाद महामना जी ने मुझे अपने सामने हाथ पकड़ कर खड़ा किया और पूछा, “बेटी बड़ी होकर क्या बनेगी?” मैंने तुरन्त उत्तर दिया, “बाबू



(फोटो नं० 2)

जी डॉक्टर बनूंगी।” तो उन्होंने बड़े स्नेह एवं आदेश के भाव से कहा, “तू यहीं आना मैं यहीं विश्वविद्यालय में तुझे नौकरी दूंगा।” फिर मेरे पिता जी से कहा, “बाबूलाल इसे डॉक्टरी पढ़ाने को विश्वविद्यालय से दूसरे शहर में भेजना क्योंकि यहां पर मैंने आयुर्वेदिक कॉलेज खोला है जब डॉक्टर बन के आयेगी तब मैं इसे यही नौकरी दूंगा।” ये उनकी ब्रह्मवाणी हो गई क्योंकि मैंने आगे बढ़ी होकर सहज भाव से प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज पटना में 1945 में प्रवेश लेकर 1950 में एमबीबीएस पास करके 1951 तक हाउस जॉब करके, 1951 में ही महिला महाविद्यालय में मेडिकल ऑफीसर वीमेन्स हॉस्टेल डिस्पेन्सरी तथा प्रवक्ता गृह विज्ञान अनुभाग में कार्यभार संभाला। मुझे कुछ पता ही नहीं चला कि कैसे सब किसी अज्ञात शक्ति द्वारा भाग्य का मार्ग बनता चला गया। क्योंकि मैं जब पटना से एमबीबीएस करके आई उसी वर्ष विवाह भी हुआ तथा मेरे पति श्री बीएमशुक्ल जी केमिस्ट्री विभाग में लेक्चरर थे तो स्वाभाविक ढंग से बीएचयू में ही निवास था। मैंने उस समय सोचा कि विश्वविद्यालय में तो मेडिकल कॉलेज है नहीं तो कोई बात नहीं प्राइवेट प्रैक्टिस में समाज सेवा करूंगी क्योंकि काशी को लेडी डॉक्टर की आवश्यकता थी उस समय डॉ० जानकी बाई, डॉ० थंगम्मा और डॉ० के० कुमारी केवल तीन डॉक्टर्स, वाराणसी में थी। परन्तु कितने सहज स्वतः ढंग से भगवान मनुष्य के भाग्य एवं कार्यों का ताना बाना बनाते हैं जिसका हमें अनुमान भी नहीं हो पाता है, जब कुछ हो जाता है तब एहसास होता है कि अरे हमने तो ऐसा सोचा भी नहीं था। परन्तु भगवान का आदेश समझ कर उसी मार्ग पर चल पड़ते हैं। एक दिन श्री गोविन्द मालवीय जी, कुलपति बीएचयू एवं महामना के पुत्र ने मुझे बुलवाया और बड़े अधिकार के साथ आदेश देते हुए कहा, “अन्नपूर्णा तुम्हें मेडिकल ऑफीसर वीमेन्स हॉस्टेल डिस्पेन्सरी एवं लेक्चरर डोमेस्टिक साइंस का काम करना है जाओ आज से कार्यभार सम्हालों, “मैंने कहा मैं इस विषय के बारे में अनिभिज्ञ हूं मुझे सोचने दीजिये कि क्या है? मैं पढ़ा भी पाऊँगी या नहीं। तो कहने लगे बाबू जी (महामना जी) ने डॉक्टर लोगों से ही इस विषय को पढ़वाया है इसीलिये तुम्हें ही पढ़ाना है। मैंने कार्यभार सम्हाला, गृहविज्ञान की उन्नति हुई गृहविज्ञान विभाग की स्थापना की तथा इस विषय की नींव पड़ी जो कि पूरे पूर्वांचल तथा उत्तर प्रदेश में फैली। बीएचयू का पाठ्यक्रम ही सब जगह स्थापित हुआ। छात्राएं जो कि पहले केवल बीए/बीएस-सी करके गृह विज्ञान में आगे बढ़ने का मार्ग नहीं होने के कारण दुखी होकर छटपटाती थीं, डिपार्टमेंट की स्थापना करने के बाद एमए/एमएस-सी, पी-एचडी करके जीवन में अपना आगे का कैरियर बनाने में समर्थ हुईं। इसका सारा श्रेय

उस महान महिषि परम आदरणीय प्रातः स्मरणीय महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की प्रेरणा एवं भविष्यवाणी का निश्चित रूप से सुफल है। मैंने बहुत बाद में ये समझा कि मैंने डॉक्टरी पेशा छोड़कर गृह विज्ञान का जो कुछ विकास करके का०हि०वि०वि० की सेवा की, ये उनकी ब्रह्मवाणी का ही फल था। काश महामना देख पाते कि उनकी वाणी कितनी सत्य थी और उनकी इच्छा पूरी हो सकी। इसकी मैं कृतज्ञ हूँ, संतुष्ट हूँ, प्रसन्न हूँ तथा धन्य हूँ।

परम पूज्य एवं श्रद्धेय श्यामाचरण डे निवास में मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र स्थापित करके काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अत्यन्त महान कार्य किया है क्योंकि 'डे बाबा' जैसा उनको कहा जाता था उनका व्यक्तित्व अनुकरणीय है। वास्तव में वे एक महान सन्त थे क्योंकि का०हि०वि०वि० की सेवा उन्होंने अवैतनिक रहकर की थी। मुझे उनका आशीर्वाद भी पाने का सौभाग्य मिला था। सन् 1935 में मैं जब 5 वर्ष की थी और उनके चरणों के पास बैठकर भोपाल रॉयल एसोसिएशन की ग्रुप फोटो (नं० 3) में मेरा फोटो आज भी उनकी स्मृति दिलाता है।



(फोटो नं० 3)